SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. 2nd year **SESSION** – 19-21

SUBJECT - Understanding the self (EPC-4)

TOPIC NAME – प्रधानाचार्य तथा शिक्षक की भूमिका

DATE - 30.06.2021

⇒ प्रधानाचार्य तथा शिक्षक की भूमिका :-

शिक्षा प्रशासक की दृष्टि से विद्यालय में प्रधानाचार्य का स्थान सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। उसकी शैक्षणिक योग्यता, कार्यदक्षता तथा अनुभव का प्रभाव विद्यालय की उन्नति पर पड़ता है। प्रधानाचार्य प्रशासन की धुरी है। विद्यालय में एकता बनाए रखने, विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों में संतुलन बनाये रखने, विद्यालय परम्पराओं को जीवित बनाए रखने तथा विद्यालय को प्रगति के मार्ग पर ले जाने के लिए प्रधानाचार्य एक प्रमुख व्यक्ति के रूप में कार्य करता है।

⇒ P. C. Wren के अनुसार, "घड़ी में जो मुख्य स्प्रिंग का काम है तथा जो मशीन में जो पहियें का स्थान है या पानी के जहाज में इंजन का स्थान है - विद्यालय में वही स्थान प्रधानाचार्य का है।"

⇒ माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार, "समाज में स्कूल की ख्याति तथा स्थिति इस बात पर निर्भर करती है कि प्राचार्य का विद्यालय के अध्यापकों, छात्रों और उनके माता-पिता तथा समाज पर कितना प्रभाव है।"

⇒ केन्द्रीय शिक्षा परामर्शी बोर्ड के अनुसार, "शिक्षा संस्था की किसी भी योजना का तब तक वांछित परिणाम नहीं निकल सकता जब तक उसका प्रशासन कुशल और योग्य न हो।"

⇒ प्राचार्य की भूमिका :-

विद्यालय में अनेकों प्रकार के कार्य होने के कारण प्राचार्य को अनेकों प्रकार का कार्य निर्वहन करना पड़ता है।

1. प्रशासक की भूमिका 2. पर्यवेक्षक की भूमिका

3. प्रबन्धक की भूमिका 4. निर्देशक की भूमिका

5. शिक्षक की भूमिका 6. प्रबंध समिति के सचिव की भूमिका

7. केन्द्र व्यवस्थापक की भूमिका 8. शैक्षिक नेतृत्व की भूमिका।

प्राचार्य को उपर्युक्त भूमिकाओं के अन्तर्गत विविध व्यवहारों के प्रारूपों का उपयोग करना होता है। प्रत्येक भूमिका में विशेष प्रकार के संबंध रखने होते हैं। प्राचार्य अपने उत्तरदायित्वों की अधिकता के कारण वरिष्ठ शिक्षकों को उत्तरदायित्व सौंप देता है।

वास्तव में प्राचार्य का यह एक प्रमुख उत्तरदायित्व होता है कि वह विद्यालय के छात्रों हेतु उस प्रकार प्रभावी, उपयोगी एवं योजनाबद्ध कार्यक्रम प्रस्तुत करे ताकि छात्रों का सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक रूप में समुचित उपयोगी हो सकें।

⇒ प्राचार्य का अन्य व्यक्तियों से संबंध -

प्राचार्य की विद्यालय के सन्दर्भ में एक विशेष भूमिका है। एक प्राचार्य को विविध प्रकार के संबंधों को स्थापित करना होता है। संबंधों के प्रमुख क्षेत्र निम्न है -

1. छात्रों से संबंध :- विद्यालय संचालन का प्रमुख उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास करना होता है। प्राचार्य इस उद्देश्य की पूर्ति में तभी सफल हो सकता है जबकि वह छात्रों के लिए इन बातों को ध्यान में रखें -

1. प्रवेश के समय छात्रों से परिचय होना।
2. छात्रों के साथ निष्पक्षता तथा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना।
3. प्रतिदिन छात्रों को पढ़ाने के लिए एक ही घंटे का समय निकालना।
4. छात्रों की बातों को सुनने के लिए समय निर्धारित करना।

2. अभिभावकों के संबंध :- आधुनिक युग में छात्रों के व्यक्तित्व का समुचित विकास करने और उनकी अनुशासनहीनता की भावना को समाप्त करने के लिए उनके माता-पिता से संपर्क स्थापित करना अति आवश्यक हो जाता है। अभिभावकों से सहयोग तथा संपर्क के लिए प्राचार्य को चाहिए कि वह विद्यालय के विभिन्न अवसरों या समारोहों में उन्हें आमंत्रित करें।

3. समाज से संबंध :- विद्यालय का निर्माण समाज की आवश्यकताओं, आदर्शों तथा उन्नति के लिए किया जाता है। अतः प्रधानाचार्य केवल विद्यालय का ही नहीं बल्कि पूरे समाज का नेता होता है। ऐसी स्थिति में उसे समाज से सफल तथा उचित संपर्क बनाने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। इसके लिए उसे विद्यालय को सामाजिक क्रियाओं, उत्सवों व समारोहों के केन्द्र रूप में खुला छोड़ देना चाहिए ताकि समाज के व्यक्ति उसका प्रयोग कर सकें।

⇒ शिक्षक की भूमिका :-

अध्यापक का महत्व न केवल शिक्षा के क्षेत्र में है वरन उसे राष्ट्र निर्माता भी कहा जाता है जैसा कि दुर्भाग्य कबीर के अनुसार "शिक्षक राष्ट्र के भाग्य निर्णायक है।"

कक्षा शिक्षण में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। वह केवल ज्ञान प्रदान करने का एक स्त्रोत नहीं है वरन् वह एक निर्देशक, प्रबन्धक, परामर्शदाता, मूल्यांकनकर्ता की भूमिका निभाता है। अध्यापक ये सारी भूमिकाएं विद्यालय परिसर में निभाता है।

1. एक प्रबन्धक के रूप में — किसी भी उद्देश्यपूर्ण कार्य को ठीक से पूरा करने के लिए कुशल प्रबन्धक की आवश्यकता होती है जो उचित नेतृत्व में सम्पूर्ण कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करता है।

इसके लिए उसे नियोजन, संगठन, निर्देशन व नियन्त्रण करना पड़ता है।

नियोजन :- नियोजन से तात्पर्य कक्षा-शिक्षण करने से पूर्व अध्यापक द्वारा तैयार की जाने वाली योजना से है जिसमें कक्षा-शिक्षण के उद्देश्य, योजना व प्रक्रिया को निर्धारित किया जाता है जो उद्देश्य की पूर्ति में सहायता प्रदान करते हैं। विषय का अध्यापन करने के लिए सभी प्रकार की आवश्यक सामग्री को एकत्रित करना तथा सही समय पर प्रयोग करने के लिए उसे तैयार करना ही नियोजन है।

संगठन :- योजना तैयार करने के बाद दूसरा महत्वपूर्ण सोपान संगठन है जिसमें विभिन्न शैक्षिक क्रियाओं का संगठन किया जाता है अर्थात् सीखने के लिए जिन क्रियाओं का चयन अध्यापकों के द्वारा ही किया जाता है उनके लिए उसे उचित शिक्षण युक्तियों, विधियों, तकनीकी, सहायक सामग्री आदि का चयन किया जाता है। यह चयन कक्षा के छात्रों के स्तर को ध्यान में रखकर किया जाता है।

नियंत्रण :- योजना निर्माण, कक्षा में संगठित प्रस्तुतीकरण तथा छात्रों को उचित निर्देशन यह तभी तभी संभव है जब शिक्षक का सम्पूर्ण प्रक्रिया पर नियंत्रण हो तथा इसका मूल्यांकन कर अगली

योजना निर्माण में आवश्यक सुधार कर सके। यह नियंत्रण कक्षा शिक्षण पर कक्षा पर निरन्तर रहना चाहिए क्योंकि तैयार की गई योजना का पूरा होना नियंत्रण पर ही आधारित है। जैसे वातावरण को अध्यापक द्वारा नियंत्रित कर शिक्षण कार्य किया जाता है तभी उसकी योजना समय से पूरी होती है।

⇒ विद्यालय प्रबंधन एवं कार्य पर नेतृत्व शैली का प्रभाव :-

नेतृत्व एक प्रक्रिया है जिसमें कोई व्यक्ति सामाजिक प्रभाव के द्वारा अन्य लोगों की सहायता लेते हुए एक सर्वनिष्ठ (common) कार्य सिद्ध करता है।

प्रबंधक अपने नीचे काम करने वाले कर्मचारियों से अपने निर्देशानुसार ही कार्य करवाता है। जैसा प्रबंधक का व्यवहार होता है और जैसे उसके आदर्श होते हैं। कर्मचारी भी वैसा व्यवहार करते हैं। इसलिए प्रबंधक का नेतृत्व जैसा होगा, कर्मचारी भी उसी के अनुरूप कार्य करेंगे।

प्रबंध जगत में नेतृत्व का अपना एक विशिष्ट स्थान है एक संस्था की सफलता या असफलता हेतु काफी हद तक नेतृत्व जिम्मेदार होता है। कुशल नेतृत्व के अभाव में कोई भी संस्था सफलता का सोपान पर नहीं कर सकती है। यहा तक

(7)

माना जाता है कि कोई भी संस्था तभी सफल हो सकती है जब उसका प्रबंधन ने नेतृत्व भूमिका का सही [illegible] निर्वहन करता है।

The End